एकविंश खण्ड

श्यामपुकुर के घर में श्रीरामकृष्ण

प्रथम परिच्छेद

(ठाकुर श्रीरामकृष्ण कलकत्ता में श्यामपुकुर के घर में भक्तों के संग में)

शुक्रवार, आश्विन के कृष्णपक्ष की सप्तमी; 15वाँ कार्त्तिक; 30 अक्तूबर, 1885 ईसवी। श्रीरामकृष्ण श्यामपुकुर में चिकित्सार्थ आए हैं। दुमंजिल वाले कमरे में हैं; समय 9 का है। मास्टर के साथ अकेले बातें कर रहे हैं। मास्टर डॉक्टर सरकार के पास जाकर पीड़ा की खबर देंगे और उन्हें साथ लाएँगे। ठाकुर का शरीर इतना अस्वस्थ है, किन्तु केवल भक्तों के लिए चिन्ता है!

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति, सहास्य)*— आज प्रात: पूर्ण आया था। सुन्दर स्वभाव है। मणीन्द्र का प्रकृति-भाव है। कैसा आश्चर्य! चैतन्य-चरित्र पढ़कर मन में यही धारणा हुई है— गोपी-भाव, सखी-भाव; ईश्वर पुरुष हैं और मैं जैसे प्रकृति हूँ।

मास्टर— जी हाँ।

पूर्णचन्द्र स्कूल का लड़का है, वयस् 15-16 है। पूर्ण को देखने के लिए ठाकुर बड़े व्याकुल हो जाते हैं, किन्तु घर वाले आने नहीं देते। देखने के लिए प्रथम-प्रथम इतने व्याकुल हो गए थे कि एक दिन रात के समय दक्षिणेश्वर से हठात् मास्टर के घर आ पहुँचे थे। मास्टर ने पूर्ण को घर से अपने साथ लाकर उन्हें मिला दिया था। ईश्वर को किस प्रकार

पुकारना चाहिए— उसके साथ इसी प्रकार की बहुत-सी बातचीत करके ठाकुर दक्षिणेश्वर लौट गए थे।

मणीन्द्र की वयस् भी 15-16 होगी। भक्तगण इन्हें 'खोका' (काका) कहकर पुकारते थे, अब भी पुकारते हैं। लड़का भगवान का नाम-गुणगान सुनकर भाव में विभोर होकर नृत्य किया करता।

द्वितीय परिच्छेद

(डॉक्टर और मास्टर)

समय 10-10.30 का। डॉक्टर सरकार के घर मास्टर गए हैं। रास्ते पर दो तल की बैठक के कमरे का बरामदा, वहाँ पर ही डॉक्टर के साथ काष्ठासन (लकड़ी के तख्त) पर बैठकर बातें कर रहे हैं। डॉक्टर के सम्मुख काँच के पात्र में जल है, उसमें लाल मछलियाँ खेल रही हैं। डॉक्टर बीच-बीच में इलायची का छिलका जल में फेंक देते हैं। कभी-कभी मैदे की गोलियाँ बटकर खुली छत की ओर गौरैया पक्षियों के आहार के लिए डाल देते हैं। मास्टर देख रहे हैं।

डॉक्टर *(मास्टर के प्रति, सहास्य)*— यह देखो, ये (लाल मछलियाँ) मेरी ओर देख रही हैं, किन्तु उस ओर जो इलायची का छिलका मैंने फेंक दिया है, उसे नहीं देखतीं। जभी कहता हूँ, केवल भक्ति से क्या होगा, ज्ञान चाहिए। *(मास्टर का हास्य)*। उन्हें देखो, चिड़ियाँ उड़ गईं; मैदे की गोलियाँ डाली थीं, उन्हें देखकर भय हुआ। उन्हें भक्ति नहीं हुई, ज्ञान ना होने के कारण। जानती नहीं कि खाने की वस्तु है।

डॉक्टर बैठकखाने में आकर बैठ गए। चारों ओर अलमारियों में स्तूपाकार पुस्तकें हैं। डॉक्टर थोड़ा विश्राम कर रहे हैं। मास्टर पुस्तकें देख रहे हैं और किसी-किसी को लेकर पढ़ते हैं। अन्त में कुछ देर तक पढ़ते रहे— Canon Farrar's Life of Jesus (कैनन फैरर की यीशु की जीवनी)।

डॉक्टर बीच-बीच में बातें करते हैं। कितने कष्ट से होम्योपैथिक हॉस्पिटल

हुआ था, उसी के सब व्यापार सम्बन्धी चिट्ठी-पत्र पढ़ने के लिए कहा और बोले कि, ''वे सब पत्र 1876 ईसवी के 'कलकत्ता जरनल ऑफ मैडिसन' में मिलेंगे।'' डॉक्टर का होम्योपैथी के ऊपर खूब अनुराग है।

मास्टर ने और एक पुस्तक बाहर निकाली है, Munger's New Theology (मुंगर का नया धर्मशास्त्र)। डॉक्टर ने देख लिया।

डॉक्टर— Munger ने युक्ति, विचार के ऊपर सुन्दर सिद्धान्त दिए हैं। तुम्हारे चैतन्य ने अमुक बात कही है, बुद्ध ने क्या कहा है, यीशुक्राइस्ट ने क्या कहा है— तभी विश्वास करना होगा— इसमें वैसा नहीं है।

मास्टर *(सहास्य)*— चैतन्य, बुद्ध लेता है, तभी वे (Munger) हैं।

डॉक्टर— जो तुम कहते हो, वही सही।

मास्टर— एक व्यक्ति (कोई) कहता तो है। तभी तो वे खड़े हुए। *(डॉक्टर का हास्य)*।

डॉक्टर गाड़ी पर चढ़े, मास्टर भी संग-संग चढ़े। गाड़ी श्यामपुकुर की ओर जा रही है, दोपहर हो गई। दोनों जन बातें करते-करते जा रहे हैं। डॉ० भादुड़ी भी बीच-बीच में ठाकुर को देखने के लिए आते हैं, उनकी ही बात चली।

मास्टर *(सहास्य)*— आपके लिए भादुड़ी ने कहा है, ईंट के टुकड़ों से आरम्भ करना होगा।

डॉक्टर— वह कैसे?

मास्टर— आत्मा, सूक्ष्म शरीर— इन सबको तो आप मानते नहीं। भादुड़ी महाशय लगता है, 'थियोसोफिस्ट' हैं। इसे छोड़, आप अवतार-लीला को नहीं मानते। जभी वे मजाक से कहते हैं, इस बार मनुष्य-जन्म तो होगा ही नहीं; कोई भी जीव, जन्तु, वृक्ष, पौधा, कुछ भी नहीं बन सकेगा। ईंट-रोड़े से आरम्भ करना होगा, फिर अनेक जन्मों के पश्चात् यदि कभी मनुष्य हों!

डॉक्टर— ओ बाबा!

मास्टर— और कहते हैं, आपका जो Science (साइन्स) को लेकर ज्ञान है, वह मिथ्या ज्ञान है। अभी है, अभी नहीं। उन्होंने उपमा भी दी है। दो छोटे

कुएँ हैं। एक छोटे कुएँ का जल नीचे से एक spring (झरने) से आ रहा है। दूसरे छोटे कुएँ का spring (झरना) नहीं है, वर्षा के जल से भर गया है। किन्तु वह जल अधिक दिन तक नहीं रह सकता। आपकी Science (साइन्स) का ज्ञान भी वर्षा के कुएँ के जल की तरह सूख जाएगा।

डॉक्टर *(ईषत् हँसकर)*— ठीक है (यह बात)।

गाड़ी कार्णवालिस स्ट्रीट पर आ उपस्थित हुई। डॉक्टर सरकार ने श्रीयुक्त प्रताप डॉक्टर को ले लिया। वे गतकल ठाकुर को देखने गए थे।

तृतीय परिच्छेद

(डॉक्टर सरकार के प्रति उपदेश— ज्ञानी का ध्यान)

ठाकुर उसी दुमंजिले कमरे में बैठे हैं— कई भक्तों के संग। डॉक्टर सरकार एवं (डॉक्टर) प्रताप के साथ बातें कर रहे हैं।

डॉक्टर *(श्रीरामकृष्ण के प्रति)*— काशी (खाँसी) फिर हो गई? *(सहास्य)* किन्तु 'काशी' में जाना अच्छा है *(सबका हास्य)*!

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— उससे तो मुक्ति होती है जी! मैं मुक्ति नहीं चाहता, भक्ति चाहता हूँ। *(डॉक्टर और भक्तगण हँसते हैं)*।

श्रीयुक्त प्रताप डॉक्टर भादुड़ी के जमाई हैं। ठाकुर प्रताप को देखकर भादुड़ी के गुणगान कर रहे हैं।

श्रीरामकृष्ण *(प्रताप से)*— आहा, वे कैसे व्यक्ति हैं! ईश्वर-चिन्तन, शुद्धाचार और निराकार-साकार— सब भाव लिए हुए हैं।

मास्टर की बड़ी इच्छा है कि ईंट-रोड़ी की बात फिर एक बार हो। वे छोटे नरेन से धीरे-धीरे, अथच ठाकुर जिससे सुन सकें— ऐसे भाव से कहते हैं, ''ईंट-रोड़ी की बात जो भादुड़ी ने कही है, याद है?''

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य, डॉक्टर के प्रति)*— और तुम्हारे लिए क्या कहा है,

जानते हो? तुम यह सब विश्वास नहीं करते, मन्वन्तर के पश्चात् तुम्हें ईंट-रोड़ी से आरम्भ करना होगा। *(सबका हास्य)*।

डॉक्टर *(सहास्य)*— ईंट-रोड़ी से आरम्भ करके कितने ही जन्मों के बाद यदि मनुष्य हो जाऊँ, फिर यहाँ आने पर तो फिर से ईंट-रोड़ी से आरम्भ करना होगा। *(डॉक्टर और सबका हास्य)*।

ठाकुर इतने अस्वस्थ हैं, तब भी उनको ईश्वरीय भाव हो जाता है और वे ईश्वर की कथा सर्वदा कहते हैं, ये ही बातें होती हैं।

प्रताप— कल देख गया था, भावावस्था।

श्रीरामकृष्ण— वह अपने-आप हो गई थी— अधिक नहीं।

डॉक्टर— बातें और भाव अब ठीक नहीं हैं।

श्रीरामकृष्ण *(डॉक्टर के प्रति)*— कल जो भावावस्था हुई थी, उसमें तुम्हें देखा था। देखा, ज्ञान का आकर (खान)— किन्तु एकदम शुष्क है, आनन्दरस नहीं मिला। *(प्रताप के प्रति)* ये (डॉक्टर) यदि एक बार आनन्द पा लें तो नीचे-ऊपर सब आनन्द से परिपूर्ण देखें। और 'मैं जो कहता हूँ वही ठीक है, तथा दूसरा जो कहता है ठीक नहीं', ऐसी बातें तो फिर और न कहेंगे। तब चिल्ला कर (हाऊ-माँऊ करके) लट्ठमार बातें फिर इनके मुख से नहीं निकलेंगी!

(जीवन का उद्देश्य— पूर्वकथा— नागा का उपदेश)

भक्तगण सब चुप हैं, हठात् ठाकुर श्रीरामकृष्ण भावाविष्ट होकर डॉक्टर सरकार से कह रहे हैं—

''महेन्द्रबाबू, क्या रुपया-रुपया करते हो! स्त्री, स्त्री!— मान, मान, कहते हो! वे सब अब छोड़कर, एकचित्त होकर ईश्वर में मन दो!— यही आनन्द भोग करो।''

डॉक्टर सरकार चुप किए हुए हैं। सब ही चुप हैं।

श्रीरामकृष्ण— ज्ञानी के ध्यान की बात नागा बताया करता था। जल ही जल है, नीचे-ऊपर परिपूर्ण! जीव जैसे मीन (मछली) है, जल में आनन्द में तैर

रही है। ठीक ध्यान होने पर सचमुच यही देखेगा।

"अनन्त समुद्र है, जल की भी सीमा नहीं। उसके भीतर जैसे एक घट है। बाहर-भीतर जल है। ज्ञानी देखता है— अन्तर-बाहर वही परमात्मा हैं। तो फिर घट क्या है? घट होने के कारण जल दो भागों में दिखाई देता है, अन्तर-बाहर बोध होता है। 'मैं'-घट रहने पर ही ऐसा बोध होता है। वही 'मैं' ही यदि चली जाती है, तो फिर तो जो है, वही है— मुख से कहा जाने वाला कुछ नहीं।

"ज्ञानी का ध्यान और किस प्रकार का है, जानते हो? अनन्त आकाश है, उसमें पक्षी आनन्द में उड़ रहा है, पंख फैलाकर। चिदाकाश, आत्मा पक्षी। पक्षी पिंजरे में नहीं है, चिदाकाश में उड़ रहा है। आनन्द नहीं समाता।*"

भक्तगण अवाक् होकर ध्यानयोग की ये बातें सुन रहे हैं। कुछ क्षण पश्चात् प्रताप ने फिर दोबारा बातें आरम्भ कीं।

प्रताप *(सरकार के प्रति)*— सोचने लगो तो सब छाया ही है।

डॉक्टर— छाया यदि कहें तब तो तीन चीजें चाहिएँ— सूर्य, वस्तु और छाया। वस्तु के बिना छाया क्या! इधर कहते हो, God real (ईश्वर सत्य) और फिर Creation unreal! Creation भी real। (इधर कहते हो ईश्वर सत्य है और फिर जगत मिथ्या! जगत भी सत्य है।)

प्रताप— अच्छा, आरसी (दर्पण) में जैसे प्रतिबिम्ब, वैसे ही मनरूप आरसी पर यह जगत दिखाई देता है।

डॉक्टर— किसी वस्तु के बिना हुए क्या कोई प्रतिबिम्ब होता है?

नरेन— क्यों, ईश्वर वस्तु है! *(डॉक्टर चुप किए रहे।)*

(जगत-चैतन्य और Science (साइन्स)— ईश्वर ही कर्त्ता)

श्रीरामकृष्ण *(डॉक्टर के प्रति)*—एक बात तो तुमने खूब सुन्दर कही है। भावावस्था तो मन के योग से होती है, यह और किसी ने नहीं कहा। तुम ने

---

* अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध कवि पी.बी. शैले (P.B. Shelley) की 'To a Skylark' तुलनीय है।

ही कहा है।

''शिवनाथ ने कहा था, अधिक ईश्वर-चिन्तन करने से पागल हो जाता है। कहता है, जगत-चैतन्य की चिन्ता करके अचैतन्य हो जाता है। वे बोधस्वरूप है, जिनके बोध से जगत-बोध होता है, उनका चिन्तन करके अबोध!

''और तुम्हारी Science (साइन्स)— यह मिलने पर वह हो जाता है, वह मिलने पर यह होता है— इनकी चिन्ता करने से वरन् बोधशून्य हो सकता है, केवल जड़ वस्तुओं को घोट-घोट कर!

डॉक्टर— इन (जड़ वस्तुओं) में ईश्वर को देखा जा सकता है।

मणि— किन्तु मनुष्य में और भी स्पष्ट दिखाई देता है। और महापुरुष में और भी अधिक स्पष्ट दीखता है। महापुरुष में उनका अधिक प्रकाश है।

डॉक्टर— हाँ, मनुष्य में तो निश्चय देखा जा सकता है!

श्रीरामकृष्ण— उनका चिन्तन करने से अचैतन्य! जिस चैतन्य से जड़ पर्यन्त चेतन हुआ है, हाथ-पाँव-शरीर हिलता है! कहते हैं शरीर हिलता है, किन्तु वे हिल रहे हैं, यह नहीं जानता। कहता है, जल से हाथ जल गया है! जल से कुछ नहीं जलता! जल के भीतर जो उत्ताप है, जल के भीतर जो अग्नि है, उससे ही हाथ जला है!

''पतीली में भात उबलता है। आलू-बैंगन उछल रहे हैं। छोटे लड़के ने कहा, आलू-बैंगन नाच रहे हैं। जानता नहीं कि नीचे आग है! मनुष्य कहता है, इन्द्रियाँ अपने-आप काम कर रही हैं! भीतर जो वही चैतन्य स्वरूप है, यह नहीं सोचता।

डॉक्टर सरकार उठे। अब विदा लेंगे। ठाकुर श्रीरामकृष्ण भी खड़े हो गए।

डॉक्टर— विपद में मधुसूदन। स्वेच्छा से 'तुंहु तुंहु' कहना। गले में यही हुआ है न, तभी। तुम जैसे कहते हो, अब धुनिये के हाथ में पड़े हो, धुनिये से ही कहो। तुम्हारी ही बात है।

श्रीरामकृष्ण— और क्या कहूँगा!

डॉक्टर— क्यों नहीं कहोगे? उनकी गोद में रहता हूँ, गोद में हगता हूँ और

बीमारी होने पर उनसे नहीं कहूँगा तो फिर किस से कहूँगा?

श्रीरामकृष्ण— ठीक-ठीक। कभी-कभी कहता हूँ, फिर होता नहीं।

डॉक्टर— फिर कहना ही अथवा क्यों होगा, वे क्या नहीं जानते?

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— कोई मुसलमान नमाज करते-करते 'हो अल्लाह' 'हो अल्लाह' कह कर चीत्कार करके पुकार रहा था। उसे किसी व्यक्ति ने कहा, तू अल्लाह को पुकारता है तो इतना चिल्ला क्यों रहा है? वे तो च्युँटी के पैर के नूपुर को भी सुन लेते हैं!

(योगी का लक्षण— योगी अन्तर्मुख— भक्त बिल्वमंगल)

श्रीरामकृष्ण— उनमें जब मन का योग हो जाता है, तब ईश्वर को खूब निकट देखता है। हृदय के मध्य में देखता है।

"किन्तु एक विशेष बात है, जितना यह योग होगा उतना ही बाहर की वस्तु से मन हट जाएगा। भक्तमाल में एक भक्त (बिल्वमंगल) की बात है। वह वेश्यालय जाता था। एक दिन बहुत रात को जा रहा था। घर में बाप-माँ का श्राद्ध हुआ था तभी देरी हो गई! श्राद्ध का खाना वेश्या को देने के लिए हाथ में ले जा रहा था। उसका वेश्या की ओर मन इतना एकाग्र था कि किसके ऊपर से होकर जा रहा है, यह तक भी होश नहीं था। मार्ग में एक योगी आँखें बन्द किए ईश्वर-चिन्तन कर रहा था, उसके शरीर के ऊपर पाँव देकर चलने लगा। योगी क्रोध से बोला, 'क्या तू देख नहीं सक रहा? मैं ईश्वर का चिन्तन कर रहा हूँ, तू शरीर के ऊपर से चला जा रहा है?' तब उस व्यक्ति ने कहा, 'मुझे माफ करें। किन्तु एक बात पूछता हूँ, वेश्या की चिन्ता करके मुझे होश नहीं है, और आप ईश्वर-चिन्ता कर रहे हैं, आपको बाहर की होश पूरी है! यह कैसी ईश्वर-चिन्ता है!' वह भक्त अन्त में गृहस्थ छोड़ कर ईश्वर की आराधना में चला गया था! वेश्या से कहा था, तुम मेरी गुरु हो, तुमने सिखाया है कि किस प्रकार ईश्वर में अनुराग करना चाहिए। वेश्या को 'माँ' कह कर त्याग किया था।"

डॉक्टर— यह तान्त्रिक उपासना है। जननी रमणी।

(लोकशिक्षा देना संसारी का अनधिकार)

श्रीरामकृष्ण— देखो, एक कहानी सुनो। एक राजा था। एक पण्डित से वह राजा रोज भागवत सुना करता था। प्रतिदिन भागवत पढ़ने के पश्चात् पण्डित राजा से कहता— राजा, समझ गए? राजा भी रोज कहता— तुम पहले समझो! भागवत का पण्डित नित्य घर में जाकर सोचता था कि राजा नित्य ऐसी बात क्यों कहता है! मैं रोज इतना करके समझाता हूँ और राजा उल्टे कहता है, तुम पहले समझो! यह क्या हुआ! वह पण्डित साधन-भजन भी किया करता था। कुछ दिन बाद उसे होश हुआ कि ईश्वर ही वस्तु है, और गृह, परिवार, धन, जन, मान— सब अवस्तु है। संसार में सब मिथ्या बोध हो जाने पर उसने गृहस्थ त्याग कर दिया। जाते समय केवल एक व्यक्ति से कह गया— राजा से कह दो, अब मैं समझ गया हूँ।

“और एक कहानी सुनो। किसी को एक भागवत के पण्डित का प्रयोजन हुआ था— पण्डित आकर नित्य श्रीमद्‌भागवत की कथा सुनाएगा। किन्तु भागवत का पण्डित नहीं मिलता। बहुत खोज के पश्चात् किसी व्यक्ति ने आकर कहा— महाशय, एक उत्कृष्ट भागवत का पण्डित मिला है। उसने कहा, वह तो सुन्दर हुआ, उनको लाओ! उस व्यक्ति ने कहा, किन्तु एक गड़बड़ है। उसके कई हल और बैल हैं, उनमें समस्त दिन व्यस्त रहता है, खेतीबाड़ी देखनी होती है, तनिक भी तो अवसर नहीं है। जिसे भागवत के पण्डित की आवश्यकता थी तब वह बोला, ओ भाई! जिसके हल और बैल हैं, भागवत का ऐसा पण्डित मुझे नहीं चाहिए। मुझे ऐसा व्यक्ति चाहिए जिसे अवसर है, और मुझे हरि-कथा सुना सके।
(डॉक्टर के प्रति) समझे?

डॉक्टर चुप किए रहे।

(केवल पाण्डित्य और डॉक्टर)

श्रीरामकृष्ण— क्या जानते हो कि केवल पाण्डित्य से क्या होगा? पण्डित लोग बहुत कुछ जानते-सुनते हैं— वेद, पुराण, तन्त्र। किन्तु कोरे पाण्डित्य से

क्या होगा? विवेक-वैराग्य चाहिए। विवेक, वैराग्य यदि हो तो तब ही उसकी बात सुनी जा सकती है। जिन्होंने संसार को सार किया हुआ है, उनकी बात लेकर क्या होगा!

''गीता पढ़ने से क्या होता है?— दस बार 'गीता-गीता' बोलने से जो होता है। 'गीता-गीता' बोलते-बोलते 'त्यागी' हो जाता है। संसार में कामिनी-काञ्चन में से जिसकी आसक्ति का त्याग हो गया है, जो ईश्वर में सोलह आना भक्ति दे सका है, वही गीता का मर्म समझा है। गीता की समस्त पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। 'त्यागी-त्यागी' कह सकने पर ही हो जाता है।''

डॉक्टर— 'त्यागी' कहो तो एक 'य' वर्ण लाना पड़ता है।

मणि— किन्तु वह 'य' वर्ण बिना लाए भी चलता है, नवद्वीप गोस्वामी ने ठाकुर से कहा था। ठाकुर पेनेटी में महोत्सव देखने गए थे, वहाँ पर नवद्वीप गोस्वामी से यही गीता की बात कही थी। तब गोस्वामी ने कहा, तग् धातु घञ् से 'ताग' हो जाता है, उसके पीछे इन् प्रत्यय लगाने से तागी हो जाता है, त्यागी और तागी का अर्थ एक है।

डॉक्टर— मुझे किसी ने राधा का अर्थ बताया था! कहा था, राधा का क्या अर्थ है, जानते हो? शब्द को उलट लो अर्थात् 'धारा, धारा'। *(सबका हास्य)*। *(सहास्य)* आज 'धारा' पर्यन्त ही रहे।

चतुर्थ परिच्छेद

(ऐहिक ज्ञान या (Science साइन्स)

डॉक्टर चले गए। ठाकुर श्रीरामकृष्ण के निकट मास्टर आकर बैठे और एकान्त में बातें हो रही हैं— मास्टर डॉक्टर के घर में गए थे, वहाँ जो समस्त बातें हुई थीं—

मास्टर *(श्रीरामकृष्ण के प्रति)*— लाल मछलियों को इलायची का छिलका दिया जा रहा था, और गौरैया चिड़ियों को मैदे की गोलियाँ। तब (डॉक्टर)

कहने लगे, 'देखा, उन्होंने इलायची का छिलका देखा नहीं, तभी चली गईं! पहले ज्ञान चाहिए, फिर भक्ति। दो-एक चिड़ियाँ भी मैदे का डेला फेंकते देख उड़ गईं। उन्हें ज्ञान नहीं, जभी भक्ति नहीं हुई।'

श्रीरामकृष्ण *(सहास्य)*— इस ज्ञान के अर्थ हैं ऐहिक ज्ञान— उनकी science (साइन्स) का ज्ञान।

मास्टर— और फिर बोले, चैतन्य कह गए हैं या बुद्ध कह गए हैं कि यीशुक्राइस्ट कह गए हैं, तभी विश्वास करूँगा— यह नहीं!'

''उनके एक पोता हुआ है— उस पुत्र-बहू की बड़ाई करने लगे। कहा, एक दिन भी घर में देखा नहीं, ऐसी शान्त और लज्जाशीला— ''

श्रीरामकृष्ण— यहाँ की बातें सोचता है। धीरे-धीरे श्रद्धा हो रही है। भाई, एकदम अहंकार क्या जाता है! इतनी विद्या, मान! रुपया हुआ है! किन्तु यहाँ (अपनी ओर इंगित करके) की बातों में अश्रद्धा नहीं है।

पञ्चम परिच्छेद

(अवतीर्ण शक्ति या सदानन्द)

समय पाँच। श्रीरामकृष्ण उसी दोतल के कमरे में बैठे हैं। चारों ओर भक्तगण चुप करके बैठे हुए हैं। उनमें बहुत से बाहर के लोग उन्हें देखने आए हैं। कोई भी बात नहीं।

मास्टर पास बैठे हैं। उनके संग अकेले कोई-कोई बात होती है।

ठाकुर कुरता पहनेंगे— मास्टर ने कुरता पहना दिया।

श्रीरामकृष्ण *(मास्टर के प्रति)*— देखो, अब और बड़ा ध्यान-श्यान नहीं करना पड़ता। अखण्ड एकदम बोध हो जाता है। अब केवल दर्शन।

मास्टर चुप किए हुए हैं। कमरा भी निस्तब्ध है।

कुछ क्षण पश्चात् ठाकुर उनसे फिर और एक बात कहते हैं।

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, ये लोग जो सबके सब एक आसन पर चुप किए हुए

बैठे हैं, और मुझे देखते रहे हैं— बात नहीं, गान नहीं; इसमें (मुझमें) क्या देख रहे हैं?

ठाकुर क्या इंगित कर रहे हैं कि साक्षात् ईश्वर की शक्ति अवतीर्ण हुई है, जभी इतने लोग आकर्षित हुए हैं; जभी भक्तगण अवाक् होकर उनकी ओर ताक रहे हैं!

मास्टर ने उत्तर दिया— जी, इन सबने आपकी अनेक बातें पहले सुनी हुई हैं, और देख रहे हैं— जो कभी भी ये लोग देख नहीं पाते— सदानन्द, बालक-स्वभाव, निरहंकार, ईश्वर-प्रेम में मतवाला! उस दिन ईशान मुखर्जी के घर आप गए थे, उसी बाहर-के कमरे में आप पायचारी कर रहे थे (टहल रहे थे), मैं भी था, किसी ने आकर आपके लिए कहा— ऐसा 'सदानन्द पुरुष' कहीं भी नहीं देखा।

मास्टर फिर चुप हो गए। घर फिर निस्तब्ध! कुछ काल पश्चात् ठाकुर फिर और मृदुस्वर में मास्टर से कुछ कह रहे हैं—

श्रीरामकृष्ण— अच्छा, डॉक्टर कैसा हो रहा है? यहाँ की बातें क्या सब ठीक से ले रहा है?

मास्टर— यह अमोघ बीज कहाँ जाएगा, एक बार न एक बार एक ओर जाकर निकलेगा। उस दिन की एक बात पर हँसी आ रही है।

श्रीरामकृष्ण— क्या बात है?

मास्टर— उस दिन (आप) कह रहे थे— यदुमल्लिक खाने के समय व्यञ्जन में नमक हुआ है, नहीं हुआ— यह जान नहीं पाता; इतना अन्यमनस्क है! कोई यदि कह दे कि इस वस्तु में नमक नहीं है तब ऐं, ऐं करके कहता है, 'नून नहीं है'? डॉक्टर ने यह बात सुनी हुई थी। वे भी कहते थे कि मैं भी जो इतना अन्यमनस्क हो जाता हूँ। आपने समझा दिया था कि यह तो विषय-चिन्तन कर-करके अन्यमनस्क होना है, ईश्वर-चिन्तन करके नहीं।

श्रीरामकृष्ण— ये बातें क्या नहीं सोचेंगे?

मास्टर— सोचने के अतिरिक्त फिर क्या! किन्तु नाना कार्य हैं, अनेक बातें भूल जाती हैं। आज भी सुन्दर कहा, जब उन्होंने कहा, 'वह तो तान्त्रिक

उपासना— जननी रमणी।'

श्रीरामकृष्ण— मैंने क्या कहा?

मास्टर— आपने कहा, हल-बैलों वाले भागवती पण्डित की बात *(श्रीरामकृष्ण का हास्य)*। और कही, उसी राजा की बात जो कहा करता था, 'तुम पहले समझो!' *(श्रीरामकृष्ण का हास्य)*।

"और कही, गीता की बात। गीता की सार बात कामिनी-काञ्चन-त्याग—कामिनी-काञ्चन-आसक्ति त्याग। डॉक्टर से आपने कहा कि गृहस्थी होकर (त्यागी बिना हुए) वह फिर और क्या शिक्षा देगा? ऐसा बोध होता है कि वे यह बात समझ नहीं सके हैं। अन्त में 'धारा', 'धारा' कहकर बात को टाल कर चले गए।"

ठाकुर भक्तों के लिए चिन्ता कर रहे हैं— पूर्ण बालक भक्त हैं, उनके लिए। मणीन्द्र भी बालक भक्त हैं, ठाकुर ने उनको पूर्ण के संग आलाप करने के लिए भेज दिया!

षष्ठ परिच्छेद

(श्री राधाकृष्ण-तत्त्वप्रसंग में— 'सब सम्भव', नित्यलीला)

सन्ध्या हो गई है। ठाकुर श्रीरामकृष्ण के कमरे में आलोक जल रहा है। कई भक्त और जो लोग ठाकुर को देखने आए हुए हैं, वे उसी कमरे में कुछ दूर बैठे हैं। ठाकुर अन्तर्मुख हैं, बातें नहीं कर रहे। कमरे के मध्य में जो हैं, वे भी ईश्वर का चिन्तन करते-करते मौन हैं।

कुछ क्षण पश्चात् नरेन्द्र एक मित्र को साथ लेकर आए। नरेन्द्र बोले, ये मेरे मित्र हैं, इन्होंने कई ग्रन्थ रचे हैं, इन्होंने 'किरणमयी' लिखी है।

'किरणमयी' के लेखक ने प्रणाम करके आसन ग्रहण किया। ठाकुर के संग बातें करेंगे।

नरेन्द्र— इन्होंने राधा-कृष्ण के विषय में लिखा है।

श्रीरामकृष्ण *(लेखक के प्रति)*— क्या लिखा है भाई, ज़रा कहो, देखूँ।

लेखक— राधा-कृष्ण ही परब्रह्म, ऊँकार के बिन्दुस्वरूप। उन्हीं राधा-कृष्ण परब्रह्म से महाविष्णु, महाविष्णु से पुरुष-प्रकृति— शिव-दुर्गा।

श्रीरामकृष्ण— सुन्दर! नित्यराधा नन्दघोष ने देखी थी। प्रेमराधा ने वृन्दावन में लीला की थी, कामराधा थी चन्द्रावली।

''कामराधा, प्रेमराधा। और भी आगे बढ़ने पर नित्यराधा। प्याज छीलने पर पहले लाल छिलका, उसके पश्चात् (ईषत्) हल्का लाल, फिर सफेद, फिर तो छिलका मिलता ही नहीं। यही है नित्यराधा का स्वरूप— जहाँ पर नेति-नेति विचार बन्द हो जाता है।

''नित्य राधा-कृष्ण, और लीला-राधाकृष्ण। जैसे सूर्य और रश्मि। नित्यसूर्य का स्वरूप, लीला-रश्मि का स्वरूप।

''शुद्ध भक्त कभी-कभी नित्य में रहता है, कभी लीला में।

''जिनका नित्य है, उनकी ही लीला है! 'दुई किंवा बहु नय' (वे एक ही हैं— दो या अनेक नहीं)।

लेखक— जी, 'वृन्दावन का कृष्ण' और 'मथुरा का कृष्ण' क्यों कहते हैं?

श्रीरामकृष्ण— वह गोस्वामियों का मत है। पश्चिम (उत्तर प्रदेश, पंजाब आदि) के पण्डित लोग नहीं कहते। उनके लिए कृष्ण एक है, राधा नहीं है। द्वारिका का कृष्ण वैसा ही है।

लेखक— जी राधाकृष्ण ही परब्रह्म हैं।

श्रीरामकृष्ण— सुन्दर! किन्तु ताँते सब सम्भव (किन्तु उनमें सब सम्भव)! वे ही निराकार, वे ही साकार। वे ही स्वराट विराट! वे ही ब्रह्म, वे ही शक्ति!

''उनकी इति नहीं— शेष नहीं; उनमें सब सम्भव। चील-गिद्ध कितना ही ऊपर क्यों न चढ़े, आकाश शरीर को नहीं छूता। यदि पूछो ब्रह्म कैसा है, वह बताया नहीं जाता। साक्षात् होने पर भी मुख से नहीं बोला जाता। यदि कोई पूछे घी कैसा है? उसका उत्तर है— कैसा घी, जी जैसा घी। ब्रह्म की उपमा ब्रह्म है और कुछ भी नहीं।